

विद्यालयों में कैसे मनायें ‘मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रम’?

● कार्यक्रम आयोजन हेतु हमारी पूर्व तैयारी व कार्यनीति ●

१. विद्यालयों में मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रम का आयोजन १४ फरवरी से एक-डेढ़ माह पूर्व ही शुरू कर दें ताकि अधिक-से-अधिक विद्यालयों में प्रचार हो सके। बड़े एवं सुप्रसिद्ध विद्यालयों में १४ फरवरी के दिन या उसके एक-दो दिन पहले अथवा १४ फरवरी के अगले दिन कार्यक्रम हो ऐसा प्रयास करें।

२. जो साधक संलग्न विधि अनुसार भली प्रकार कार्यक्रम कराने में सक्षम हो, उन्हें पूजन-विधि कराने का दायित्व दें। ऐसे साधकों के लिये जिला स्तरीय प्रशिक्षण व प्रायौगिक प्रशिक्षण दे सकते हैं। इस प्रशिक्षण में पूजन विधि को समझाने हेतु ‘माँ-बाप को मत भूलना’ DVD भी दिखायें। प्रशिक्षणार्थियों को वक्तृत्व का भी अभ्यास करवायें। एक दिन का जिला स्तरीय प्रशिक्षण भी रख सकते हैं उसमें लघु नाटिका करके भी विद्यालय में किस प्रकार कार्यक्रम करना है यह समझा सकते हैं। बहनों व भाईयों का अलग-अलग प्रशिक्षण हो।

३. क्षेत्र अनुसार ३ से ४ सेवाधारों का अलग-अलग समूह बन जाये और वे अपने-अपने क्षेत्रों के विद्यालयों में कार्यक्रम का आयोजन करवायें।

४. हर समूह के पास अपना साउंड (stranger अथवा बैटरी पर चलनेवाला स्पीकर), माइक, डी.वी.डी. प्लेअर, पेन ड्राइव आदि हो। डी.वी.डी. प्लेअर को मेगा स्पीकर अथवा किसी भी एम्प्लीफायर से कैसे जोड़ते हैं, यह भी प्रशिक्षण में सिखायें।

● विद्यालयों के दृस्टी/प्राचार्य से भ्रंट ●

१. विद्यालयों में जाकर प्राचार्य को मातृ-पितृ पूजन दिवस की जानकारी दें और कार्यक्रम के आयोजन के लिये निवेदन करें। साथ ही मातृ-पितृ पूजन की पुस्तक, मैगजीन, स्टीकर, पोस्टर उन्हें दे और यथासंभव ‘माँ-बाप को मत भूलना’ DVD भी दें, मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रम की वीडियो क्लीपिंग लैपटॉप, एल.सी.डी अथवा मोबाइल में दिखायें (यह क्लीपिंग मुख्यालय से ई-मेल द्वारा मँगवा सकते हैं अथवा <http://www.mppd.ashram.org/Downloads.aspx> से डाउनलोड करें।) सच १, सच २, सेवा दर्पण, जागो हिन्दुस्तानी वी.सी.डी भी साथ में दे।

२. प्राचार्य से कार्यक्रम का दिन व समय निश्चित करें।

सूचना : यह अनुभव की हुई बात है कि जहाँ सेवाधार स्वयं विद्यार्थियों को कार्यक्रम की महत्ता और माता-पिता को बुलाने हेतु प्रेरित करता है वहाँ ज्यादा माता-पिता आते हैं। अतः विद्यालय प्रबंधन (मेनेजमेन्ट) सूचना दे उसकी अपेक्षा आपको स्वयं विद्यार्थियों को संबोधित करने का मौका मिले ऐसी अनुमति लेने का पुरुषार्थ करें।

३. सभी विद्यार्थियों को सामूहिक या कक्षा में जा-जाकर कार्यक्रम में अपने माता-पिता को लाने हेतु विशेषरूप से प्रेरित करें।

४. विद्यालयों के शिक्षक एवं कर्मचारियों को भी अपने बच्चों को कार्यक्रम में लाने हेतु प्रेरित करें।

५. जिन बच्चों के माता-पिता नहीं आ पायेंगे, वे विद्यार्थी भी पूजन-सामग्री ला सकते हैं, उनके द्वारा सरस्वती माँ का और उनके शिक्षकों का पूजन करवायें।

● कार्यक्रम के पूर्व ●



१. कार्यक्रम के दिन विद्यालय में समय से पूर्व पहुँचकर भलीप्रकार तैयारी करें। तैयारी के लिए सामग्री - माता सरस्वती अथवा भगवान गणपति की बड़ी फोटो, पूज्य बापूजी का बड़ा श्रीचित्र, डेकोरेशन का सामान, व्यासपीठ हेतु चादर, साउंड, बैनर, कैमेरा। साथ में कुछ आरती की थालियाँ व पूजन की सामग्री (जो माता-पिता साथ नहीं लाये हों उनके लिए) भी रखें।

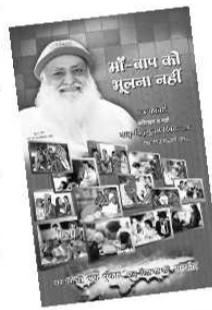
२. क्षेत्र के सज्जन, सुप्रतिष्ठित व्यक्तियों, नगर सेवकों, महापौर, जिलाधीश आदि को भी प्रधानाचार्य की अनुमति लेकर आमंत्रित कर सकते हैं।



● कार्यक्रम के बाद ●

१. प्राचार्य कक्ष में जाकर प्राचार्य को धन्यवाद दें एवं विद्यालय के लेटर-पेड पर ‘मातृ-पितृ पूजन दिवस’ कार्यक्रम के निमित्त अभिप्राय-पत्र भरवा लें व संभव हो तो, वीडियो बाइट भी ले। (इस मार्गदर्शिका के अंत में प्रारूप दिया गया है।)

२. कार्यक्रम की समाप्ति के बाद कार्यक्रम के फोटो एवं प्रेसनोट समाचार पत्रों को भेजें। चुने हुए अच्छे-से-अच्छे २-३ फोटो व प्रेस कटिंग ‘बाल संस्कार मुख्यालय’ में bskamd@gmail.com व sewa@ashram.org पर मेल करें।



● द्रस्टी/प्राचार्य से अनुमति हेतु संबोधन ●

नमस्ते ! हम पूज्य संत श्री आशारामजी बापूजी की संस्था से आये हैं । हम आपके विद्यालय के विद्यार्थियों के लिये एक विशेष उद्देश्य से आये हैं ! सभी द्रस्टी/प्राधानाचार्य यहीं चाहते हैं कि उनके विद्यालय के विद्यार्थियों में अनुशासन हो और वे अच्छे संस्कारों से भी सम्पन्न बनें ! बालकों की प्रतिभाशक्ति, स्मरणशक्ति, ओज व तेज शक्ति बढ़े तथा उनमें संयम के संस्कारों की वृद्धि हो, इसके लिये आप और आपके शिक्षक भी मेहनत करते हैं । ‘मातृ-पितृ पूजन दिवस’ की पहल ने तो देश और विदेशों में भी एक अच्छी लहर लाई है । पूज्य बापूजी की प्रेरणा से कई वर्षों से विद्यार्थी उत्थान के दैवीकार्य आज भी चल रहे हैं । जिसमें हजारों बाल संस्कार केन्द्र, योग व उच्च संस्कार शिक्षा कार्यक्रम, विद्यार्थी शिविर, दिव्य प्रेरणा-प्रकाश ज्ञान प्रतियोगिताओं आदि के द्वारा विद्यार्थियों की प्रतिभा का विकास हो रहा है । (सेवा दर्पण की किताब दिखाकर समझायें ।) पिछले कई वर्षों से ‘मातृ-पितृ पूजन दिवस’ तो देश-विदेश में बढ़े अत्साह व हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है ।

१४ फरवरी का दिन आ रहा है । जहाँ १४ फरवरी को कई युवक ‘वेलेन्टाइन डे’ मनाकर अपनी समय, शक्ति बरबाद करके संयमहीन, चरित्रहीन तथा ओज-तेज से हीन हो जाते हैं वहाँ इस मातृ-पितृ पूजन दिवस ने समाज को और ऐसे राह से भटक रहे युवाओं को नयी दिशा दी है । विदेशी संस्कृति के अंधानुकरण से हमारी युवा पीढ़ी तथा आनेवाली पीढ़ी भारतीय संस्कृति से विमुख होती जा रही है । भारतीय संस्कृति का महत्व बताकर बच्चों को सही राह पर मोड़ना यह हम सबका नैतिक कर्तव्य है । (अब वीडियो ऐड लैपटॉप आदि पर दिखायें ।)(www.mppd.in/downloads से वीडियो डाउनलोड करें ।)

अमेरिका में एशियन मूल के विद्यार्थी क्यों पढ़ाई में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करते हैं ?

प्राधानाचार्य होने के नाते आपका मुख्य प्रयास है कि आपके विद्यार्थी पढ़ाई में आगे बढ़े और विद्यालय का अच्छा परिणाम आये । माता-पिता के पूजन से अच्छे परिणाम का क्या संबंध है ? इस पर शोध करते शोधकर्ताओं के सामने एक प्रश्न आया कि अमेरिका में एशियन मूल के विद्यार्थी क्यों पढ़ाई में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करते हैं ? इस पर उन्होंने पाया कि वे अपने बड़ों का आदर करते हैं और माता-पिता की आज्ञा का पालन करते हैं तथा उज्ज्वल भविष्य-निर्माण के लिए गम्भीरता से श्रेष्ठ परिणाम पाने के लिए अध्ययन करते हैं । अतः जो विद्यार्थी माता-पिता का आदर करेंगे वे ‘वेलेन्टाइन डे’ मनाकर अपना चरित्र भ्रष्ट नहीं कर सकते हैं । संयम से उनकी बुद्धिशक्ति का विकास होगा और वे पढ़ाई में अच्छे परिणाम लायेंगे ।

आपसे एक निवेदन है...

हम आप से यहीं आशा करते हैं कि आप अपने विद्यालय/महाविद्यालय में यह मातृ-पितृ पूजन के कार्यक्रम के आयोजन की अनुमति प्रदान करें । कार्यक्रम की रूपरेखा कुछ इस प्रकार होगी - माता-पिता व बच्चे सामूहिक रूप से पूजन करेंगे । सभी विद्यार्थी एक साथ आने वाले जीवन के लिए शुभाशीष लेंगे ।

सूचना : १) प्रधानाचार्य से अनुमति लेकर पोस्टर को विद्यालय के नोटिस बोर्ड पर लगवायें ।

२) यदि कोई आश्रम की वर्तमान परिस्थिति के बारे में पूछे तो उन्हें आश्रम द्वारा हो रहे सेवाकार्यों के बारे में बतायें, विद्यार्थी उत्थान के सेवाकार्यों की जानकारी दें । भारत की संस्कृति की महिमा बतायें तथा सदियों से इस संस्कृति पर हो रहे रहे कुठाराघात के बारे में भी बतायें । उन्हें यह एहसास दिलायें कि भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार करनेवाले पूज्य बापूजी को भी कई गलत आरोपों में साज़िश के तहत फँसाया गया है । इतना सब होने के बावजूद भी पिछले डेढ़ साल से आश्रम द्वारा हो रहे सेवाकार्यों में कोई भी रुकावट नहीं आयी है बल्कि लोगों का विश्वास तथा उनका हौसला और भी दृढ़ हो गया है । इसके परिणामस्वरूप इस वर्ष दीपावली पर्व पर हुए सारस्वत्य मंत्र-अनुष्ठान शिविर में अहमदाबाद आश्रम में पिछले वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष ११ गुनी ज्यादा विद्यार्थियों की संख्या थी । इससे स्पष्ट मालूम पड़ता है कि बापूजी के साधक-शिष्य जानते हैं कि बापूजी सच्चे हैं और जल्द ही यह सच्चाई समाज के सामने भी आयेगी । (ऋषि प्रसाद का नवम्बर अंक भी दिखा सकते हैं ।)

विद्यार्थियों को प्रेरित कैसे करें ?

इस भारतवर्ष की पवित्र भूमि पर जन्मे भारत माँ के आप सब सपूतों को नमस्कार व स्नेह भरा ‘हरि ॐ’

आदरणीय प्राचार्यश्री, शिक्षकों और आप सभी प्यारे विद्यार्थियों के हृदय में बसे परमात्म देव को, गुरुदेव को मेरा कोटि-कोटि प्रणाम ।

वे महान कैसे बनें ?

क्या आप को पता है कि भगवान श्री गणेश, श्रवण कुमार, भक्त पुण्डलिक इतने महान कैसे हुए ? जी हाँ ! वे मातृ-पितृ भक्ति के एक आदर्श मूर्तिमान स्वरूप थे । क्या आप भी उनकी तरह एक आदर्श मातृ-पितृ भक्त बनना चाहोगे ? जीवन में महान बनना चाहोगे ? “हाँ”

एक विश्वव्यापी पर्व...

आप सभी को बताते हुए हमें अत्यंत खुशी हो रही है कि पिछले कई वर्षों से देश-विदेश में १४ फरवरी को 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाया जाता है जिसमें आपके विद्यालय जैसे हजारों विद्यालय व आप जैसे लाखों विद्यार्थी हिस्सा लेते हैं । यह दिवस अपने आपमें एक अनोखा व महत्वपूर्ण दिवस है क्योंकि इस दिन हम अपने माता-पिता का पूजन करते हैं और यह संकल्प करते हैं कि हमारे जीवन में मातृ-पितृ भक्ति जगे और माता-पिता की सेवा का भाव बढ़े ।

वर्तमान में विदेशी संस्कृति तथा उनके त्यौहार जैसे - वेलेन्टाइन डे ने हमारे देश के अनेकों युवक-युवतियों के जीवन को तबाही की राह पर मोड़ दिया है । जिसके परिणामस्वरूप उनका स्वास्थ्य, उनकी यादशक्ति तथा उनका संयमबल दिन-प्रतिदिन घटता जा रहा है । अगर देश की युवा पीढ़ी का ऐसा ही हाल रहा तो देश की उन्नति कैसे होगी ? इसी पर विचार करते हुए करुणास्वरूप पूज्य संत श्री आशारामजी बापू ने वेलेन्टाइन डे का विरोध करने के बदले जन-जन तक पहुँचाया यह 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' का पर्व ।

उदाहरण - सोचिए कि आपके पास एक ग्लास में शुद्ध पानी भरा है । अब उसमें यदि कुछ मिट्टी के कण डाल दिये जायें, तो क्या वह पानी किसी की प्यास बूझा पायेगा ? (नहीं) लेकिन यदि उसी पानी के ग्लास में कुछ फिटकरी के कण डाल दिए जाये तो क्या होगा जानते हो ? पानी फिर से शुद्ध हो जायेगा और अब क्या वह पानी पीने के काम में आयेगा ? (हाँ) हमें इससे यह समझ में आता है कि वो ही चीज उपयोग में आ सकती है जो गलत बातों से, दुर्गुणों से दूर हो । ऐसा ही यह वेलेन्टाइन डे विद्यार्थियों व युवानों के जीवन में अशांति व कलह पैदा कर रहा है और 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' उसमें फिटकरी जैसा काम करता है । यह पर्व निरुत्साहियों में उत्साह भर देता है, बेरंग जीवन में खुशियों के रंग भर देता है व दूटे परिवारों को जोड़ देता है ।

भारतीय संस्कृति में माता-पिता को देव माना गया है...

हमारी भारतीय संस्कृति में माता-पिता को देव कहा गया है । मातृदेवो भव । पितृदेवो भव । आचार्यदेवो भव । माता-पिता ने हमारे पालन-पोषण में कितना कष्ट उठाया है और हमारे आचार्यों ने हमें सही ज्ञान की सीख दी है । इनकी पूजा-अर्चना व सेवा करने से छोटे-से-छोटा व्यक्ति भी महान बन जाता है । माता-पिता एवं गुरु की सेवा करनेवाला स्वयं चिरआदरणीय बन जाता है । इस सिद्धांत को जिन्होंने भी अपनाया वे खुद भी आदरणीय और पूजनीय बन गये, फिर चाहे वे भगवान गणेशजी हों, भगवान श्रीरामचंद्रजी हों, भीष्म पितामह हों अथवा एक साधारण सा बालक श्रवणकुमार हो । मंदिर में तो पत्थर की मूर्ति में भगवान की भावना की जाती है जबकि जीते जागते माता-पिता एवं गुरुदेव में तो सचमुच भगवान बसे हैं । ऐसे देवस्वरूप माता-पिता व गुरुजनों का जहाँ आदर-पूजन होता हो वहाँ की धरती माता भी अपने आपको सौभाग्यशाली मानती है ।

आपके विद्यालय के प्रांगण में इस कार्यक्रम का आयोजन...

पूरे भारतवर्ष में पिछले कई वर्षों से यह दिवस मनाया जा रहा है । पिछले वर्ष १६७ देशों में यह मातृ-पितृ पूजन दिवस व्यापक रूप में मनाया गया । यहाँ तक कि विश्वप्रसिद्ध BBC न्यूज चैनल ने पूज्य बापूजी द्वारा शुरू किये गए इस पर्व की भूरी-भूरी प्रशंसा की । इतना ही नहीं प्रसिद्ध क्रिकेटर ईशांत शर्मा, एकटर गोविन्दाजी, प्रसिद्ध सिंगर कुमार शानू, अनुराधा पौडवाल और अनूप जलोटाजी ने भी इस दिवस को सराहा । भारत के गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंहजी, विश्व हिन्दू परिषद के मुख्य संरक्षक श्री अशोक सिंघलजी और अनको-अनेक गणमान्य नागरिकों ने भी पूज्य बापूजी का इस दिवस की शुरुवात करने हेतु खूब-खूब अभिनंदन किया और हमारे राष्ट्रपति भवन से तो पत्र आया कि 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' के आयोजन हेतु माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने बहुत प्रसन्नता प्रकट की है ।

इस वर्ष भी यह पर्व देश-विदेश के विभिन्न धर्मों के लोग मना रहे हैं । आप सभी को भी हो रहा होगा कि हम भी यह मातृ-पितृ पूजन दिवस मनायें । हम आपको यह खुशखबर देने आये हैं कि दिनांक को के दिन आपके विद्यालय के प्रांगण में बजे इस मातृ-पितृ पूजन दिवस कार्यक्रम के आयोजन की अनुमति आपके प्राचार्यश्री ने दे दी है । इसमें आप सभी को अपने माता-पिता को आमंत्रित करना है । इस कार्यक्रम में सभी विद्यार्थी अपने माता-पिता व शिक्षकों का भी पूजन करेंगे । पूजन के लिए आपको पूजन की सामग्री जैसे - एक थाली, कुंकुम, चावल, दो फूलमालाएँ, फूल, दीपक, तेल, माचिस, थोड़ा-सा मधुर-प्रसाद (मिठाई) लाना है ।

यह मातृ-पितृ पूजन की पुस्तक हम आपको भेंट रूप में दे रहे हैं । इसमें आप पायेंगे - यह दिवस क्यों मनाते हैं ?, तुम्हारे जीवन में चाँद कैसे लगे ?, मातृ-पितृ पूजन की मंत्रोच्चारणसहित विधि, स्वास्थ्यवर्धक बातें आदि । पुस्तक में दी गयी

पूजन विधि के अनुसार ही यह पूजन कार्यक्रम यहाँ मनाया जायेगा ।

एक संकल्प - सभी विद्यार्थी एक-दो मिनिट के लिये अपनी आँखें बंद करके शुभ संकल्प करेंगे कि हम १४ फरवरी को यह मातृ-पितृ पूजन दिवस जरुर मनायेंगे और हम रोज माता-पिता व अपने शिक्षकों को प्रणाम करेंगे और हमारे विद्यालय में आयोजित इस पूजन कार्यक्रम में तारीख को अपने माता-पिता को यहाँ जरुर लायेंगे ।

खूब-खूब धन्यवाद...

आपने हमारी बातें सुनीं और हमें अपना कीमती समय दिया इसके लिये आपको खूब-खूब धन्यवाद, मुझे आशा नहीं बल्कि पूरा विश्वास है कि आप अपने माता-पिता को इस कार्यक्रम में जरुर लायेंगे । इसकी अधिक जानकारी आप विद्यालय के नोटिस बोर्ड पर लगे मातृ-पितृ पूजन दिवस के इस पोस्टर से भी पढ़ सकते हैं ।

धन्यवाद ।



‘मातृ-पितृ पूजन दिवस’ कार्यक्रम कैसे करें ?

शुभारंभ



१) श्री गणेश जी की स्तुति :
“ॐ गं गणपतये नमः ।” (३ बार)

२) श्री गणेश वंदना :
वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥



३) दीप-प्रज्ज्वलन :
दीपो ज्योतिः परं ब्रह्म दीपो ज्योतिर्जनार्दन ।
दीपो हरतु मे पापं दीपो ज्योतिर्नमोऽस्तुते ॥

४) माँ सरस्वती जी की स्तुति :
“ॐ श्री सरस्वत्यै नमः ।”



५) गुरु वंदना :
“ॐ श्री गुरुभ्यो नमः ।”
६) प्रार्थना : ‘गुरुब्रह्मा गुरुर्विष्णु...’
व ‘त्वमेव माता च पिता...’
(केवल दो श्लोक)
७) ॐकार का गुंजन (सात बार)

* अतिथि स्वागत : १. प्राचार्य द्वारा उद्बोधन (स्वागत एवं कार्यक्रम का उद्देश्य)

२. अतिथियों का फूलों द्वारा स्वागत (चयनित विद्यार्थियों द्वारा)



शास्त्र वचन...

‘माता-पिता एवं गुरु का त्याग करनेवाला, उनकी निंदा करनेवाला मनुष्य समस्त वेदों का ज्ञाता होने पर भी यज्ञादि को करने का अधिकारी नहीं होता। ऐसे मूढ़, अहंकारी और निकृष्ट प्राणी को दान देनेवाला, भोजन करनेवाला या उसकी सेवा करनेवाला भी नरकगामी होता है।’

मातृ-पितृ पूजन दिवस की महिमा

बच्चे का जब जन्म होता है, पलता है, बड़ा होता है, शिक्षित होता है, परेशानी में फँसता है... सभी में उसको माता-पिता के आश्रय की जरूरत पड़ती है। बच्चों को पालने-पोषने के लिए माता-पिता भी अपने सामर्थ्य अनुसार सब कुछ करते हैं। फिर चाहे उनको अपनी सुख-सुविधा को ही क्यों ना छोड़ना पड़े वे उसकी भी परवाह नहीं करते। सद्गुरु भी हमें भगवन्नाम मंत्र की दीक्षा देकर हमें आत्मविद्या का प्रसाद देते हैं और हमारे जन्मों-जन्मों के पापों को काट देते हैं। सत्संग द्वारा ईश्वर का ज्ञान देकर परमात्मा प्राप्ति का मार्ग दिखाते हैं और सदा के लिए मुक्त कर देते हैं। तो आप ही बताइये, ऐसे माता-पिता और सद्गुरु की तुलना इस सृष्टि में किसी और से की जा सकती है क्या? (नहीं की जा सकती)

पिता एक नदी हैं तो माँ उसकी शीतलता है...

कहते हैं कि ईश्वर हर घर में अवतरित नहीं हो सकते इसलिए उन्होंने माता-पिता और गुरु की रचना की। बच्चों के लिए पिता एक नदी हैं तो माँ उसकी शीतलता है। माँ अगर छाँव है तो पिता विशाल वृक्ष है, यदि माँ ममता की धारा है तो पिता जीवन का सहारा है। ऐसे देवतुल्य माता-पिता का एहसान चुकाया नहीं जा सकता। अगर हम अपनी खाल के जूते भी बनाकर माता-पिता को पहनायें तो भी उनके क्रण से उत्तरण नहीं हो सकते हैं।

(निम्न पंक्तियाँ विद्यार्थियों से पीछे-पीछे उच्चारण करवायें।)

नहीं कोई माँ सा प्यारा है, नहीं कोई पिता सा सहारा है।

न कोई माँ की ममता जैसा, न कोई पिता के सम जैसा॥

नहीं माँ जैसा है कोई भाव, नहीं पिता जैसी कहीं छाँव।

संग माता-पिता निसर्ग है, उनके चरणों में हमारा स्वर्ग है॥

माता-पिता को वृद्धाश्रमों में छोड़ देते हैं, क्यों...

मगर जब कुछ संतानें बड़ी होकर गलत संगति में पड़ जाती हैं और अपने माता-पिता का अपमान करने लगती हैं तो विचार करिये कि माता पिता के हृदय पर क्या बीतती होगी। आजकल कुछ युवक-युवतियाँ १४ फरवरी को वेलेन्टाइन डे मनाकर, गलत संग में पड़कर मनमाना आचरण करके अपना जीवन अंधकारमय बना देते हैं। ऐसे युवक-युवतियों के जीवन में कलह, अशांति, निराशा व आत्महत्या के विचार बढ़ जाते हैं। जिसके परिणामस्वरूप वे बड़ों के प्रति भी अपमानजनक व्यवहार करने लगते हैं। यही संतानें आगे चलकर अपने माता-पिता को वृद्धाश्रमों में भी छोड़ देती हैं।

माता-पिता और सद्गुरु कितने महान हैं...





यह दिवस निरंतर जलनेवाली पूजा ज्योत है...

आप सभी सचमुच बड़े सौभाग्यशाली हैं क्योंकि आपको आज सही समय पर सही चीज़ की पहचान हो रही है। आज मातृ-पितृ पूजन का कार्यक्रम मनाकर आप अपने आपको धनभागी महसूस करेंगे। हम तो आपके विद्यालय के प्राचार्य तथा पर के देव माने जाते हैं जो समाज उत्थान के दैवीकार्य करते हैं। मातृ-पितृ पूजन दिवस पूज्य बापूजी द्वारा शुरू किया गया एक ऐसा दिवस है जिसका महत्व केवल एक दिन तक सीमित नहीं है। यह दिवस निरंतर जलनेवाली एक ज्योत है, जिसके प्रकाश से मन की सारी बुराइयाँ मिटने लगती हैं। हमें कभी भी अपने माता-पिता एवं गुरु का कर्ज तथा अपना फर्ज भूलना नहीं चाहिए।

यह मानवमात्र का पर्व है, सभी धर्मों का पर्व है...

देश में कई लोग वेलेन्टाइन डे मनाते हैं परंतु क्या कोई ये जानने कि कोशिश करता है कि ये 'वेलेन्टाइन डे' कहाँ से शुरू हुआ अथवा इसके पीछे क्या राज है? एक बार किसी संत ने किसी युवक से पूछा : 'भाई तुम ये वेलेन्टाइन डे क्यों मनाते हो? इसके पीछे क्या अर्थ है?' उस युवक ने असमंजस में पढ़कर उत्तर दिया कि 'मालूम नहीं, सब मनाते हैं इसलिए हम भी मनाते हैं।' यह सुनकर हमको हँसी आ रही है पर देखा जाये तो पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण से हम दिनों-दिन अपनी संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं। देश की युवा पीढ़ी कमजोर, अशांत, दुःखी व चिंतित हो रही है। अब और युवकों की बरबादी न हो इसलिए करुणास्वरूप पूज्य संत श्री आशारामजी बापूजी ने 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाने की पहल की। यह पर्व अपने देश में ही नहीं विदेशों में भी मनाया जाने लगा है। यह पर्व केवल किसी एक मत, पंथ या धर्म का पर्व नहीं है बल्कि यह मानवमात्र का पर्व है, माता-पिता और बच्चों का पर्व है, सभी धर्मों का पर्व है।



**सब धर्मों की एक पुकार,
मात-पिता का करें सत्पर**

विदेशों में इस दिवस को 'Parents workshop day' के नाम से मनाया जाता है। कई मुस्लमान बच्चे तो १४ फरवरी के दिन अपनी अम्मी और अब्बाजान का आदर-सत्कार कर, उनकी दुआएँ लेते हैं और 'अब्बा-अम्मी इबादत दिन' मानते हैं यह भी कितनी खुशी की बात है। है कि नहीं? (हाँ)

आइये हम सब मिलकर यह संकल्प करें कि...

हमारे माता-पिता के उपकार को, उनकी हमारे लिये सही गयी पीड़ा को व्यर्थ नहीं जाने देंगे। संतों-महापुरुषों व शास्त्रों द्वारा दिखाये गए मार्ग पर चलते हुए अपनी संस्कृति, गुरुजनों और माता-पिता की सेवा करते रहेंगे और हर वर्ष १४ फरवरी को मातृ-पितृ पूजन दिवस के रूप में मनायेंगे।

(निम्न पंक्तियाँ विद्यार्थियों से पीछे-पीछे उच्चारण करवायें।)

सद्गुरु मात-पिता से बढ़कर, नहीं कोई हितैषी जग में। इनका ही उपकार लहू बन, दौड़ रहा है रंग-रंग में॥
मात-पिता सद्गुरु सेवा कर, हम दुनिया में आदर पायेंगे। इनका भाव से पूजन कर, हम अपना जीवन महकायेंगे॥

फोटो/वीडियो खींचते समय इन बातों का विशेष ध्यान दें -

- * फोटो/वीडियो का Resolution अच्छा हो। * उपर से लें ताकि पूरा क्षेत्र स्पष्ट रूप से दिखें और भीड़ भी दिखाई दे।
- * बैनर भी दिखे। * कोई भी कैमरा की ओर ना देखें। * चेहरा प्रसन्नमुख हो। * प्रसन्नमुख बच्चों को आगे रखें। जो माता-पिता और बच्चे भाव विभोर हों उनका क्लोज-अप भी ले सकते हैं तथा कार्यक्रम पूरा होने के बाद उनका व प्राचार्य की वीडियो बाइट भी लें। *फोटो/वीडियो सेवा की जिम्मेदारी एक-दो सेवादारों को पहले से ही नियुक्त कर दें। * वीडियो बाइट लेते वक्त आवाज स्पष्ट हो, अन्य शोरगुल ना आयें। * वीडियो लेते वक्त कैमरा स्थिर रहें हिलें नहीं। स्टैंड का उपयोग करें। * अच्छे फोटो को ऋषि-प्रसाद, लोक कल्याण सेतु, ऋषि दर्शन व आश्रम वेबसाइट आदि में भी स्थान दिया जायेगा।



पूजन केरो कराराये

(सबसे पहले बैकग्राउंड में शंख की ध्वनि सुनायी देगी।)

सूचना : १) कार्यक्रम को और प्रभावशाली बनाने हेतु वक्तृत्व की सेवा करनेवाला सेवाधार पूजन विधि के आँडियों को ट्रेक अनुसार पहले से ही सेट कर लें। २) पूजन विधि, श्लोक, गीत, बैकग्राउंड म्यूजिक के लिए आप 'माँ-बाप को मत भूलना' - नयी डी.वी.डी. का उपयोग भी कर सकते हैं।

<http://www.mppd.ashram.org/Downloads.aspx> से भी आप डाउनलोड कर सकते हैं।

शिवपुराण में आता है - 'जो पुत्र माता-पिता की पूजा करके उनकी प्रदक्षिणा करता है ।

उसे पृथ्वी-परिक्रमाजनित फल अवश्य सुलभ हो जाता है ।'

तो आओ ! हम भी अपने माता-पिता का पूजन करके धन्य हो जायें।



माता-पिता को स्वच्छ तथा ऊँचे आसन पर बिठायें। बेटे-बेटियाँ माता-पिता के माथे पर कुंकुम का तिलक करें।



माता-पिता के सिर पर पुष्प एवं अक्षत रखें।



माता-पिता को फूलमाला पहनायें।

(इस समय गीत चले - 'पूजन करूँ मैं मात-पिता का...')

जैसे भगवान गणेशजी ने अपने पिता भगवान शिवजी और माता पार्वती जी की सात परिक्रमा कर सर्वप्रथम पूजनीय होने का वरदान पाया, आशीर्वाद पाया और वे वंदनीय हो गये। ऐसे ही हम भी अपने माता-पिता की सात परिक्रमा करें। इससे पृथ्वी परिक्रमा का फल प्राप्त होता है। (परिक्रमा के समय बैकग्राउंड में पहले श्लोक 'यानी-कानी च पापानि...' फिर गीत 'पूजन करूँ मैं मात-पिता का...' चले)



चित्र के अनुसार माता-पिता को झुककर विधिवत् प्रणाम करें।

(इस समय बैग्राउंड में श्लोक 'अभिवादन शीलस्य...' चले)



थाली में दीपक जलाकर माता-पिता की आरती करें। अपने माता-पिता एवं गुरु में ईश्वरीय भाव जगाते हुए उनकी सेवा करने का दृढ़ संकल्प करें।

दीप-प्रज्ज्वलन श्लोक : दीपो ज्योतिः परं ब्रह्म...
आरती : ॐ जय जय मात-पिता, प्रभु गुरुजी मात-पिता....



अब माता-पिता भाव-विभोर होकर बच्चों के माथे पर तिलक करें। (थोड़ा म्यूजिक चले)



फिर माता-पिता बच्चों के सिर पर स्नेहपूर्वक पुष्प व अक्षत रखें और अपने गले की फूलमाला बच्चों को पहनायें। मानो जीवन की सारी दुआएँ, सारी खुशियों के फूल उनके गले में डाल रहे हैं। (थोड़ा म्यूजिक चले)

पूज्य बापूजी का परम कल्यणकारी संदेश है कि, “अब बच्चे थोड़ी देर मौन बैठें। माता-पिता अपने बच्चों को स्नेहपूर्वक देखें और मन-ही-मन उनके प्रति आत्मकृपा बरसायें। इस समय बच्चे आदर से, सद्भाव से माता-पिता को निहारें... और देसा चिंतन करें कि उनका अंतर्यामी परमात्मा उन पर आशीर्वाद बरसा रहा है, अपना शुभ आशीष बरसा रहा है।” (कर्णामय वातावरण बनाने के लिए लम्बे समय तक बैग्राउंड म्यूजिक चले)



बच्चों के सिर पर हाथ धुमायें... उन्हें शुभ आशीष दें। माता-पिता बच्चों को आशीर्वाद दें कि इनका मंगल हो।



माता-पिता अपनी संतान को प्रेम से सहलायें। संतान अपने माता-पिता के गले लगे।



बेटे-बेटियाँ माता-पिता में ईश्वरीय अंश देखें और माता-पिता बच्चों में ईश्वरीय अंश देखें।

अब हर शुभ घड़ी की तरह, बेटे-बेटियाँ माता-पिता का मुँह मीठा करें और माता-पिता भी अपने बच्चों को मधुर-प्रसाद खिलायें। बच्चे अपने माता-पिता के गले लगें... तथा माता-पिता अपनी संतान को प्रेम से सहलायें... (इस भावमय क्षणों में ‘आज परम आनंद मिला....’ गीत पूरा चलायें। यदि वातावरण भावपूर्ण हो गया हो, सब रो रहे हों तो गीत २-३ बार भी चला सकते हैं। यह गीत ‘माँ-बाप को मत भूलना’ डीवीडी में भी है।) इसके बाद पूज्य बापूजी का संदेश चलाये(गीत व संदेश आप इंटरनेट से डाउनलोड कर सकते हैं।) यही है असली प्रेम-दिवस ! पूज्य बापूजी द्वारा प्रेरित ‘मातृ-पितृ पूजन दिवस’ !



संकल्प

सूचना : नीचे दिये हुए दोनों संकल्प एक-एक वाक्य पहले शिक्षक बोले फिर पीछे बच्चे/माता-पिता बोलें ।

* बच्चे-बच्चियाँ पवित्र संकल्प करें : “मैं अपने माता-पिता व गुरुजनों का आदर करूँगा/करूँगी । मेरे जीवन को महानता के रास्ते ले जानेवाली उनकी आज्ञाओं का पालन करना मेरा कर्तव्य है और मैं उसे अवश्य पूरा करूँगा/करूँगी ।”

* माता-पिता बच्चों के सिर पर हाथ रखेंगे और बच्चों को आशीर्वाद देते हुए उनके मंगलमय जीवन के लिए इस प्रकार शुभ संकल्प करें : “तुम्हारे जीवन में उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति व पराक्रम की वृद्धि हो । तुम्हारा जीवन माता-पिता, प्रभु और गुरु भक्ति से महक उठे । तुम्हारे कार्यों में कुशलता आये । तुम त्रिलोचन बनो, तुम्हारी बाहर की आँख के साथ भीतरी विवेक की कल्याणकारी आँख भी जागृत हो । तुम पुरुषार्थी बनो और हर क्षेत्र में सफलता तुम्हारे चरण चूमे । आयुष्मान भव - तुम दीर्घायु बनो । श्रद्धावान भव - तुम श्रद्धावान बनो । ब्रह्मविद भव - तुम ब्रह्मवेत्ता बनो ।”

तो यह है पूज्य संत श्री आशारामजी बापू की पावन प्रेरणा से शुरू हुआ दिवस ‘मातृ-पितृ पूजन दिवस’ । ये ही है सच्चा प्रेम दिवस ।

(सभी से निम्न पंक्तियाँ उच्चारण करवाएँ ।)

नहीं कोई दिवस मातृ-पितृ पूजन समान ।

लाये दिवस ऐसा संत श्री बापू आशाराम ॥

हम दृढ़ संकल्प करते हैं कि हम अपने माता-पिता और गुरुजनों की सेवा करते रहेंगे और हर वर्ष १४ फरवरी को मातृ-पितृ पूजन दिवस के रूप में एक निःस्वार्थ प्रेम दिवस मनायेंगे और सद्गुरु की परम कृपा से इसी जीवन में ईश्वर को प्राप्त करके रहेंगे ।

आप सचमुच में बहुत-बहुत भाग्यशाली हैं ।

संदेश (आभिभावकों, प्राचार्य, शिक्षकों व विद्यार्थियों के लिए)

जिन विद्यार्थियों को बचपन में ही, विद्यार्थीकाल में ही अच्छे संस्कार मिले हैं, ऐसे बच्चों के लिए बाहरी सुख-सुविधा उतना महत्त्व नहीं रखती । वे जैसी भी परिस्थिति में रहते हैं, स्वयं तो संतुष्ट रहते हैं, प्रसन्न रहते हैं, उनके संपर्क में आनेवालों को भी उनसे कुछ-न-कुछ सीखने को मिल जाता है ।

अतः आप सभी विद्यार्थी बहुत ही भाग्यशाली हैं कि ऐसे संस्कृति-प्रेमी माता-पिता की आप संतानें हैं, इन्हें अच्छे विद्यालय में आप शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं जहाँ विद्यालय को सँभालनेवाले ऐसे सुयोग्य प्राचार्य और पढ़ानेवाले ऐसे शिक्षक हैं जिनके हृदय में भारत देश के प्रति, अपनी भारतीय संस्कृति के प्रति दिव्य भाव हैं । आप सचमुच में बहुत-बहुत भाग्यशाली हैं ।

बोलो भारत माता की जय, अपने माता-पिता व गुरुजनों की जय, इस महान विद्यालय में पढ़ानेवाले प्यारे महान विद्यार्थियों की भी जय । बोलो (विद्यालय का नाम) की जय ।

और ऐसे आदरणीय प्राचार्य और शिक्षकों की भी जय हो जिन्होंने भारतीय संस्कृति की इस महान परंपरा को पुनः स्थापित करने के लिए अपने विद्यालय में ‘मातृ-पितृ पूजन दिवस’ के कार्यक्रम का आज आयोजन करवाया ।

अनुभव

द्रस्टी/प्राचार्य/अभिभावक/किसी विद्यार्थी को सामने बुलाकर अपना अनुभव बताने को कहें ।

सूचना : द्रस्टी/प्राचार्य को आश्रम की सामग्री को गिफ्ट पैकिंग करके भेंट भी दे सकते हैं ।

(निम्न पंक्तियाँ विद्यार्थियों से पीछे-पीछे उच्चारण करवायें ।)

आज से ही ठान लिया है हमने, शुभ कार्य से न शर्मायेंगे ।

माता-पिता और गुरुजनों की पूजा और सेवा करके, अपना भाग्य बनायेंगे ॥

करते हैं हम अभी संकल्प, भारतीय संस्कृति को सदैव अपनायेंगे ।

१४ फरवरी को वेलेंटाइन डे नहीं, 'मातृ-पितृ पूजन' दिवस मनायेंगे ॥

'मातृ-पितृ पूजन' दिवस मनायेंगे, 'मातृ-पितृ पूजन' दिवस मनायेंगे ॥

* आरती : सभी मिलकर गुरुदेव की आरती करेंगे ।

'ॐ जय जगदीश हरे...' (इसका ऑडियो भी चला सकते हैं ।)

● अतिरिक्त मैटर ●

ऐसा केवल एक माँ ही अपने बच्चे के लिए कर सकती है

* प्रेरक-प्रसंग : एक सौदागर राजदरबार में दो गायों को लेकर आया । दोनों ही स्वस्थ, सुंदर व दिखने में लगभग एक जैसी थीं । सौदागर ने राजा से कहा 'राजा साहब ! ये गायें माँ-बेटी हैं परंतु मुझे यह नहीं पता कि इसमें से माँ कौन है और बेटी कौन है ? क्योंकि दोनों एक जैसी ही हैं ।' मैंने अनेक जगहों पर लोगों से पूछा परंतु कोई भी इन दोनों की सही पहचान न बता सका । इसलिए मैं आपके पास आया हूँ । अब आप ही मुझे सही जवाब दे सकते हैं ।' राजा ने अपने कुशाग्र बुद्धिवाले बुजुर्ग मंत्री को बुलाकर कहा कि वो इस प्रश्न का उत्तर दे । दोनों गायों को देखकर मंत्री भी विस्मयता में पड़ गया और उसने एक दिन का समय माँगा ।

घर जाने पर उसकी पत्नी ने मंत्री की परेशानी का कारण पूछा, तो मंत्री ने सारी बात बता दी । मंत्री की बात सुनकर पत्नी मुस्करायी और बोली कि 'बस इतनी सी बात है ! यह तो मैं भी बता सकती हूँ ।' अगले दिन मंत्री अपनी पत्नी को राजदरबार में ले गया । मंत्री की पत्नी ने दोनों गायों के आगे भोजन रखा और कुछ ही देर बाद उसने बता दिया कि दोनों में से माँ कौन है और बेटी कौन है । सभा में उपस्थित सारे लोग दंग रह गये ।

मंत्री की पत्नी बोली 'पहली गाय के जल्दी-जल्दी खाने के बाद ही दूसरी गाय ने भोजन के लिए मुँह आगे किया और दूसरीवाली ने पहली गाय के लिए अपना भोजन छोड़ दिया । ऐसा केवल एक माँ ही अपने बच्चे के लिए कर सकती है अर्थात् दूसरीवाली गाय ही माँ है ।

* मातृ-पितृ पूजन दिवस के प्रचार के लिये निम्न सामग्री उपलब्ध है - (१) 'माँ-बाप को भूलना नहीं' साहित्य (रंगीन व B&W) - बॉटने हेतु (२) 'माँ-बाप को मत भूलना' DVD (३) फ्लेक्स बैनर - कार्यक्रम स्थल पर लगाने हेतु (४) 'माँ-बाप को भूलना नहीं' रंगीन मैगजीन (५) स्टीकर (६) सौजन्य रसीद बुक (७) आमंत्रण रसीद बुक (८) रेडिओ एड, कॉलर ट्यून और फ्लेक्स हॉर्डिंग (९) वीडियो एड । * सामूहिक मातृ-पितृ पूजन के कार्यक्रम में साधकों के पंजीकरण के लिए रसीद बुक रहेगी । जिसका शुल्क रु. ५० है । (इसमें २० रु. डीवीडी, २० रु. पूजन सामग्री तथा १० रु. व्यवस्था का शुल्क रहेगा ।)

पायें मातृ-पितृ पूजन दिवस की हैलो ट्यून्स

अपने मोबाइल फोन पर

	Airtel user Dial (13 Digits)	TATA DOCOMO user SMS SET<space><code> to 543211
आरती करूँ मैं मात-पिता की...	543211 4530214	5857115
गीले में खुद सोकर...	543211 4531967	5857116

(मूल्य, वैधता एवं शर्तें कम्पनी अनुसार लागू होंगी)

बाल संस्कार विभाग, अखिल भारतीय श्री योग वेदांत सेवा समिति, संत श्री आशारामजी आश्रम, अहमदाबाद ।

संपर्क : ०૭૯-३૯૮૭૭૭૪૯/५०/५१/५२, ई-मेल :- bskamd@gmail.com, वेबसाइट :- www.ashram.org

www.mppd.in 

प्राचार्य के आवेदन-पत्र का प्रारूप

सदैव सम और प्रसन्न रहना ईश्वर की सर्वोपरि भक्ति है ।

श्री योग वेदांत सेवा समिति

सम्पर्क :

दिनांक :

‘मातृ-पितृ पूजन दिवस’

प्रेरणास्रोत : पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

आदरणीय प्राचार्य श्री,

विषय : मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रम का आयोजन ।

महोदय,
सप्रेम सादर नमस्कार ।

मातृदेवो भव । पितृदेवो भव । आचार्यदेवो भव । माता-पिता एवं गुरु की सेवा करनेवाला स्वयं चिरआदरणीय बन जाता है । इस सिद्धांत को जिन्होंने भी अपनाया वे खुद भी आदरणीय और पूजनीय बन गये, फिर चाहे वे भगवान गणेशजी हों, भगवान श्रीरामचंद्रजी हों, भीष्म पितामह हों अथवा एक साधारण सा बालक श्रवणकुमार हो । मंदिर में तो पत्थर की मूर्ति में भगवान की भावना की जाती है जबकि जीते जागते माता-पिता एवं गुरुदेव में तो सचमुच भगवान बसे हैं । ऐसे देवस्वरूप माता-पिता व गुरुजनों का जहाँ आदर-पूजन होता हो वहाँ की धरती माता भी अपने आपको सौभाग्यशाली मानती है ।

१४ फरवरी को वेलेन्टाइन डे मनाकर युवक-युवतियाँ तबाही के रास्ते न जायें बल्कि वे अपना जीवन उन्नत करें, वे तेजस्वी-ओजस्वी बनें और उनके हृदय में माता-पिता व गुरुओं के प्रति आदर, सम्मान बढ़ता रहे इसी उद्देश्य से श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ पूज्य संत श्री आशारामजी बापू की पावन प्रेरणा से पिछले कई वर्षों से वैशिक स्तर पर ‘मातृ-पितृ पूजन दिवस’ मनाया जा रहा है । इससे युवक-युवतियाँ संयमी और अपने माता-पिता व शिक्षकों का आदर सत्कार करनेवाले बनते हैं ।

जो विद्यार्थी माता-पिता का आदर करेंगे वे ‘वेलेन्टाइन डे’ मनाकर अपना चरित्र भ्रष्ट नहीं कर सकते । संयम से उनके ब्रह्मचर्य की रक्षा होने से उनकी बुद्धिशक्ति विकसित होगी, जिससे उनकी पढ़ाई के परिणाम अच्छे आयेंगे ।

अतः आपसे नम्र निवेदन है कि आप भी अपने विद्यालय में इस पावन पर्व का आयोजन करवाएँ और हमें सेवा का सुअवसर प्रदान करें । आपके विद्यालय/महाविद्यालय में इस मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रम के आयोजन से विद्यार्थियों एवं उनके माता-पिता में स्नेहमय सामंजस्य स्थापित करने का दिव्य कार्य तो होगा ही साथ ही सभी अभिभावक आपके खूब-खूब आभारी हो जायेंगे ।

हमें विश्वास है कि आप माता-पिता और विद्यार्थियों के इस अनोखे स्नेह-मिलन कार्यक्रम के आयोजन में अपना योगदान जरूर देंगे । आपका सहयोग विद्यार्थियों के चरित्र की रक्षा एवं देश की उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा ।

आभार सहित,

भवदीय,

समाचार पत्रों को देने हेतु 'प्रेसनोट' का प्रारूप (नं. १)

बापूजी ने शुश्क करवाई माता-पिता की आरती/ विश्वभर में छाया बापूजी का 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' अभियान/ १४ फरवरी को बच्चों ने अपने माता-पिता का किया पूजन/ माँ-बाप का पूजन कर किया सच्चे प्रेम का इजहार/ विद्यार्थियों ने मनाया १४ फरवरी को एक सच्चा प्रेम दिवस... प्रेरणास्रोत : संत श्री आशारामजी बापू/ सच्चा प्रेम तो माँ-बाप और सद्गुरु के चरणों में होता है

माँ-बाप जो हमें जीवन देते हैं, खुद कष्ट सहकर भी हमारी आवश्यकताएँ पूरी करने में अपना जीवन लगा देते हैं, ऐसे माँ-बाप का ऋण कभी नहीं चुकाया जा सकता है। परंतु पाश्चात्य भोगवादी, कुत्सित विचारधारा तथा वेलेन्टाइन डे जैसी कुरीतियों के कारण अनेक युवक देवतुल्य माता-पिता के सारे उपकारों को भुलाकर अपने वृद्ध माँ-बाप को वद्धाश्रम में छोड़ने लगे हैं। अगर ऐसा ही होता रहा तो देश की स्थिति कैसी हो जायेगी? यह बड़ा विचार करने योग्य है। इसी बात को ध्यान में रखकर श्रोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ पूज्य संत श्री आशारामजी बापू ने विश्वभर में १४ फरवरी को 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' की पहल की और देशभर में एवं वैशिक स्तर पर चलाया एक अभियान 'मातृ-पितृ पूजन दिवस'। इस अभियान में देश-विदेश के कई धर्माचार्य, सामाजिक संगठन तथा कई सुप्रसिद्ध हस्तियाँ भी जुड़ गयी हैं। इसी के अंतर्गत विद्यालय में दिनांक को विशाल रूप में मातृ-पितृ पूजन का कार्यक्रम मनाया गया। जिसमें विद्यार्थियों ने अपने माता-पिता व शिक्षकों का विधिवत् पूजन किया, उनकी आरती उतारी तथा सात प्रदक्षिणाएँ भी की। अपने प्यारे लाडलों से पूजन करता देख सभी का दिल भर आया और माता-पिता ने अपने लाडलों को भरेकंठ से आशीर्वाद देकर उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ की।

वेलेन्टाइन डे के दुष्प्रभाव तथा मातृ-पितृ भक्ति के सद्भाव को दर्शाती लघु नाटिकाओं के द्वारा मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचायदिवो भव। का सुंदर संदेश कार्यक्रम के द्वारा समाज को दिया गया। माता-पिता और संतानों के सच्चे प्रेम पर बनी विशेष फिल्म 'माँ-बाप को मत भूलना' ने तो कमाल ही कर दिया! जिसने भी देखा, गद्गद और भाव-विह्वल हो गया।

कार्यक्रम के अंत में सभी विद्यार्थियों में 'माँ-बाप को भूलना नहीं' पुस्तिका बाँटी गयी। विद्यालय के प्रधानाचार्यजी ने इस कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की और (यहाँ पर कार्यक्रम का विवरण अपने शब्दों में अधिकतम ५ से ७ पंक्तियों में व्यक्त करें।) इस तरह अपने भाव प्रकट किये।

इस अवसर पर श्री , आदि गणमान्य लोग उपस्थित थे। प्रधानाचार्य श्री ने सभी उपस्थित अतिथियों एवं अभिभावकों को हार्दिक धन्यवाद दिया। इसी के साथ कार्यक्रम बड़े उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' का यह कार्यक्रम अन्य विद्यालयों के लिए भी अनुकरणीय है।

..... शहर में जगह-जगह लगे 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' के होर्डिंगज को देख स्थानीय लोगों में यह पर्व चर्चा व एक अच्छी पहल का विषय बना हुआ है। पूज्य संत श्री आशारामजी बापू द्वारा शुरू हुआ 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' का यह पर्व देशभर के २५००० से अधिक विद्यालयों के साथ-साथ विदेशों में भी मनाया जायेगा/ जा रहा है। छत्तीसगढ़ सरकार ने तो यह दिवस राज्य के हर विद्यालय में मनाना गत ३ वर्षों से अनिवार्य कर दिया है।

(सूचना : दिये गये तीन सेम्पल प्रेसनोट में से कोई एक प्रेसनोट समाचार पत्रों में दे सकते हैं।)

समाचार पत्रों को ढेने हेतु 'प्रेसनोट' का प्रारूप (नं. २)

होने लगी है माता-पिता की आरती, प्रेरणाखोत : पूज्य संत श्री आशारामजी बापू/बापूजी ने सिखाया माता-पिता की आरती करना...

इस विकास के युग में बाह्य विकास तो हो रहा है किंतु जीवन-मूल्यों का, संस्कारों का हास भी तेजी से हो रहा है। विश्वमांगल्य की भावना से ओतप्रोत पूज्य संत श्री आशारामजी बापू ने मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाने की शुरूआत की और पूरे विश्व को एक नयी राह दिखायी। वेलेन्टाइन डे के कारण गिरते युवाधन को उठाने की यह मुहिम बापूजी ने कई वर्षों से शुरू की हुई है।

इसी के अंतर्गत (शहर का नाम) में, दिनांक को विद्यालय में विशालरूप में सामूहिक मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें विद्यार्थियों तथा अभिभावकों को भारतीय संस्कृति की महिमा बतायी गयी। सभी विद्यार्थी अपनी संस्कृति के प्रति जागृत हों इसलिए उन्हें बताया गया कि 'माता और पिता ने बच्चों के पालन-पोषण में कितने कष्ट उठाये हैं, उन कष्टों को भुलाकर अपने माँ-बाप का अपमान कभी नहीं करना चाहिए। उनका आदर सत्कार करना ही हमारा कर्तव्य है और ईश्वर भी उसी पर प्रसन्न होते हैं जो अपने देवतुल्य माता-पिता की सेवा तथा पूजन करते हैं। अगर विद्यार्थी अपने माता-पिता को रोज प्रणाम करें और उनकी सेवा करें तो वे अवश्य महान बन सकते हैं।'

भूलो सभी को मगर, माँ-बाप को भूलना नहीं। उपकार अगणित हैं उनके इस बात को भूलना नहीं !!' इसी शिक्षा के साथ सभी विद्यार्थियों ने विधिवत् अपने माता-पिता का पूजन तथा सत्कार किया और उनकी सात परिक्रमाएँ की और उनका दिव्य आशीर्वाद पाया। माता-पिता का पूजन करके सभी भाव विभोर हो उठे। सभी विद्यार्थियों ने अपने माता-पिता के चरणों में शीश झुकाकर यहीं संकल्प किया कि 'हम हमारे माता-पिता के उपकार को नहीं भूलेंगे। उनकी सेवा करके अपना जीवन दिव्य बनायेंगे।'

इस कार्यक्रम से प्रभावित होकर विद्यालय के प्राचार्य, शिक्षक तथा उपस्थित अभिभावकों ने इस पर्व की भूरि-भूरि प्रशंसा की और अपने भाव व्यक्त किये। कहाँ तो विदेश के युवान जो वेलेन्टाइन डे मनाकर अपने माता-पिता का अपमान करके मनमाना जीवन जीते हैं। और कहाँ ऐसे सौभाग्यशाली विद्यार्थी जो अपने माता-पिता का पूजन कर अपने जीवन को संस्कारों से महका रहे हैं, उज्ज्वल बना रहे हैं। सभी का मन पूज्य बापूजी के प्रति गद्गद हो उठा और सभी ने पूज्य बापूजी के दैवीकार्यों की सराहना की कि समाजोत्थान में बापूजी द्वारा शुरू किया गया यह 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' सचमुच मानवमात्र का हित कर रहा है।

कार्यक्रम के आखिरी में सभी ने यह दृढ़ संकल्प किया कि १४ फरवरी को हम वेलेन्टाइन डे न मनाकर मातृ-पितृ पूजन दिवस ही मनायेंगे और जन-जन तक इसका प्रचार करेंगे। कार्यक्रम की पूर्णाहुति पर सभी को 'माँ-बाप को भूलना नहीं' पुस्तक का वितरण भी किया गया।

समाचार पत्रों को ढेने हेतु 'प्रेसनोट' का प्रारूप (नं. 3)

बापूजी ने चलायी...उक अनोखी लहर, माता-पिता के पूजन की/ विश्वमानव को उक नयी दिशा...‘मातृ-पितृ पूजन दिवस’/ देश-विदेश में छाई मातृ-पितृ पूजन की धूम

१४ फरवरी 'वेलेन्टाइन डे' के नाम पर लाखों युवाओं की जिंदगी तबाह हो रही है। युवाओं के द्वारा नशीली चीजों का सेवन करना, घर से भाग जाना, दारू पीना, एक-दूसरे को स्पर्श करके अपनी ऊर्जा का नाश करना - ये सब किसी भी देश के लिए चिंता का विषय है। इसी को ध्यान में रखकर पूज्य संत श्री आशारामजी बापू ने १४ फरवरी को वेलेन्टाइन डे की जगह 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाने की पहल की और इसको व्यापक बनाने हेतु एक विश्वव्यापी अभियान चलाया।

यह अभियान शहर के कई विद्यालयों, महाविद्यालयों, मंदिरों, बाल संस्कार केन्द्रों तथा धार्मिक स्थलों में चलाया गया और जिसमें सामूहिक रूप से मातृ-पितृ पूजन दिवस को बड़े धूमधाम से मनाया गया। संस्कारों को संजोये इस पर्व का लाभ विद्यालय के विद्यार्थियों ने दिनांक : को उठाया। जिसमें विद्यार्थियों ने अपने माता-पिता व शिक्षकों को तिलक लगाकर उनका पूजन किया, उनकी सात प्रदक्षिणाएँ की। कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोग यह देख भाव-विभोर हो उठे। विद्यालय के शिक्षकगण तथा कुछ विद्यार्थियों के माता-पिता ने भी आगे आकर अपने भाव व्यक्त किये।

यह 'मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रम' बड़े उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। (यहाँ पर कार्यक्रम का विवरण अपने शब्दों में अधिकतम ५-७ पंक्तियों में व्यक्त करें।) इस अवसर पर श्री , , आदि गणमान्य लोग उपस्थित थे। प्रधानाचार्य श्री ने सभी उपस्थित अतिथियों एवं अभिभावकों को हार्दिक धन्यवाद दिया।

'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाकर हम भूले हुए गौरव को, भूले हुए अतीत को फिर से याद करके भारत को ऊँचे शिखर पर ले जा रहे हैं। कार्यक्रम देखकर ऐसा लगा कि अब वो दिन दूर नहीं है जब भारत चम-चम-चमकेगा और विश्व की अशांति दूर करने में भारत का ही कदम आगे होगा। जो लोग ऐसा राष्ट्रहित का कार्य करके सुदृढ़ राष्ट्र बनाने में साझीदार हो रहे हैं वे धनभागी हैं और जो होनेवाले हैं उनका भी आवान किया जाता है।

अभिप्राय पत्र का प्रारूप नं. १

विद्यालय : **शहर :**

प्रति,

श्री योग वेदांत सेवा समिति ।

आज हमारे विद्यालय में मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाया गया । माता-पिता की आरती और उनका पूजन-सत्कार करने की जो परंपरा पूज्य बापूजी ने शुरू की है वो सचमुच अनोखी और संस्कारों को फिर से जागृत करनेवाली है ।

कार्यक्रम के दौरान बच्चों के द्वारा अपने माता-पिता की प्रदक्षिणा करना, उन्हें फूलों की माला पहनाना, जगमगाते दीयों से उनकी आरती करना यह दृश्य देख कईयों की आँखें भर आयी । जब माता-पिता ने बच्चों के सिर पर हाथ रखा और उनको गले लगाया तो लगा कि मातृ-पितृ पूजन दिवस सच में निर्दोष प्रेम लानेवाला पर्व है और विद्यार्थियों व युवाओं को अपनी संस्कृति से जोड़े रखनेवाला पर्व है । जिसकी आज के पतनकारी परिवेश में नितांत आवश्यकता है । कई बार माता-पिता और संतानों के बीच ऐसी दूरियाँ बन जाती हैं कि संतानें उनका अनादर करने लगती हैं या उन्हें वृद्धाश्रमों में छोड़ आती हैं । इस पर्व को देख ऐसा लगा कि यह पर्व सभी संतानें व माता-पिता मनायेंगे तो शायद वृद्धाश्रमों की जरूरत ही नहीं पड़ेगी । कार्यक्रम में एक विशेष बात यह भी रही कि विद्यार्थियों ने शिक्षकों का भी पूजन किया । हमारी संस्कृति भी कहती है : मातृदेवो भव । पितृदेवो भव । आचार्यदेवो भव । मातृ-पितृ पूजन दिवस के कार्यक्रम में हमारे विद्यालय के विद्यार्थियों ने और शिक्षकों ने लाभ लिया ।

इतने सुंदर कार्यक्रम के लिये मैं हृदय से श्री योग वेदांत सेवा समिति और उनके साधकों का धन्यवाद व आभार व्यक्त करता हूँ और जिनकी प्रेरणा से यह शुरूआत हुई है ऐसे पूज्य संत श्री आशारामजी बापूजी के लिये मैं नतमस्तक हूँ, जो इतनी आँधी-तूफानों के बीच आज भी अपनी सत्प्रेरणा सबको दे रहे हैं और समाज को ऊँचा उठा रहे हैं ।

धन्यवाद ।

प्रधानाचार्य के हस्ताक्षर,

अभिप्राय पत्र का प्रारूप नं. २

विद्यालय : **शहर :**

प्रति,

श्री योग वेदांत सेवा समिति ।

कहते हैं कि माता-पिता में सब देवों का वास होता है । सर्वतीर्थमयी माता... सर्वदेवमयः पिता... इसी परम्परा को बनाये रखने के लिये श्री योग वेदांत सेवा समिति द्वारा हमारे विद्यालय में मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाया गया । कार्यक्रम में शिक्षकों, विद्यार्थियों और उनके माता-पिता का उत्साह देखते ही बनता था । पूर्वकाल में भगवान गणेश ने भगवान शंकर और माँ पार्वती का पूजन किया था । आज यहाँ हमारे विद्यालय में भी ऐसा पूजन कार्यक्रम देख सब गढ़गढ़ हो गये । मातृ-पितृ पूजन दिवस के कार्यक्रम में हमारे विद्यालय के विद्यार्थियों ने, शिक्षकों ने और अभिभावकों ने लाभ लिया ।

हम निश्चित तौर पर यह कहना चाहेंगे कि वेलेन्टाइन डे का जो गलत चलन हमारे देश में शुरू हो चुका था वो मातृ-पितृ पूजन दिवस से खत्म हो जायेगा और इसका पूरा श्रेय संत श्री आशारामजी बापू को है जो पिछले कई वर्षों से यह मुहिम चलाये हुए हैं । हमारे देश और पूरे विश्व के सभी माता-पिता और संतानों को मातृ-पितृ पूजन दिवस जरूर मनाना चाहिए । मातृ-पितृ पूजन का साहित्य सभी तक पहुँचे, इस अभियान को चलानेवाले साधकों का हौसला और अधिक बढ़ता रहे ताकि विद्यार्थियों में अच्छे संस्कारों की नींव मजबूत हो ऐसी हमारी आशा है ।

धन्यवाद ।

प्रधानाचार्य के हस्ताक्षर,